Toppersnotes®
Unleash the topper in you

UP–TET

शिक्षक पात्रता परीक्षा

Uttar Pradesh Basic Education Board (UPBEB)

भाग 2 (ब)

प्राथमिक स्तर

सामान्य हिन्दी एवं संस्कृत

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	वर्ण विचार	1
2	वाक्य रचना	5
3	विराम चिन्ह	9
4	विलोम शब्द	12
5	पर्यायवाची	18
6	संज्ञा	20
7	सर्वनाम	22
8	विशेषण	23
9	क्रिया	24
10	अव्यय– अविकारी शब्द	31
11	वचन	34
12	लिंग	35
13	काल	38
14	उपसर्ग	40
15	प्रत्यय	49
16	देशज शब्द	57
17	तत्सम – तद्भव शब्द	61
18	मुहावरे	63
19	लोकोक्तियाँ	69
20	वाच्य	72
21	संधि	74
22	समास	90
23	अलंकार	96

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	हिंदी के प्रसिद्ध कवि एवं उनकी रचनाएँ	100
25	हिन्दी शिक्षण	103
26	हिन्दी शिक्षण विधि	106
27	भाषा–शिक्षण उपागम	114
28	भाषा दक्षता का विकास	116
29	भाषा कौशल	118
30	शिक्षण के अन्य कौशल	121
31	भाषा–शिक्षण में चुनौतियाँ	123
32	शिक्षण अधिगम सामग्री, पाठ्य पुस्तक, बहुमाध्यम, अन्य संसाधन	124
33	आंकलन	128
34	सतत् एवं समग्र मूल्यांकन	133
35	निदानात्मक और उपचारात्मक शिक्षण	135
36	संज्ञाप्रकरणतः	137
37	सर्वनाम रूप	140
38	विशेषण–विशेष्य	143
39	धातुरूपाणां	145
40	प्रत्ययप्रकरणम्	150
41	अव्ययानां प्रयोगः	157
42	वचन	159
43	संख्या ज्ञानं	160
44	शब्दरूपाणां	162
45	संधिः	168
46	समासा:	175

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
47	उपसर्गा:	178
48	वाच्य परिवर्तन	179
49	सूक्तियाँ	180
50	अलंकार	182
51	अशुद्धिसंशोधनम्	186
52	विलोमार्थी शब्द	187
53	पर्यायवाची शब्द	189
54	कारकप्रकरणम्	191
55	नवीन विधियाँआधुनिक विधिया	195
56	नवीनतम उपागम	199
57	व्याकरणशिक्षणम्	202
58	संस्कृत शिक्षण विधयः	207
59	संस्कृत भाषाकौशलस्य विकासः	212
60	संस्कृतशिक्षणे – अधिगम, संप्रेषणस्य, पाठ्यपुस्तकानि	218
61	संस्कृतभाषाशिक्षणस्य मूल्यांकन	220
62	संस्कृत शिक्षण सिद्धान्ताः	222
63	गद्यांश एवं पद्यांश	224

1 CHAPTER वर्ण विचार

भाषा – परस्पर विचार विनियम को भाषा कहते हैं ।

- भाषा संस्कृत के भाष् शब्द से बना है । भाष् का अर्थ है बोलना।
- भाषा की सार्थक इकाई वाक्य है । वाक्य से छोटी इकाई उपवाक्य, उपवाक्य से छोटी इकाई पदबंध, पदबंध से छोटी इकाई पद (शब्द), पद से छोटी इकाई अक्षर व अक्षर से छोटी इकाई ध्वनि या वर्ण है।
- जैसे – हम शब्द में दो अक्षर (हम) एवं चार वर्ण (ह अ म् अ) है ।

<u>लिपि</u> –किसी भाषा को लिखनें का ढंग लिपि कहलाता है। हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी है । इसकी निम्न विषेशताएँ है ।

(i) यह बाएँ से दायें लिखी जाती है ।
(ii) प्रत्येक वर्ण का एक ही रूप होता है ।
(iii) उच्चारण के अनुरूप लिखी जाती है अर्थात् जैसे बोली जाती है, वैसी लिखी जाती है ।

व्याकरण – जिस शास्त्र में शब्दों के शुद्ध रूप एवं प्रयोग के नियमों का निरूपण होता है, उसे व्याकरण कहते है ।

वर्ण – हिंदी भाषा में वर्ण वह मूल ध्वनि है जिसका विभाजन नहीं हो सकता।

किसी भी भाषा की सबसे छोटी इकाई (ध्वनि) वर्ण कहलाती है।

जैसे :– क्, च्, ट् अ, इ, उ

वर्ण के भेद :– 2 प्रकार है।

(i) स्वर वर्ण (ii) व्यंजन वर्ण

स्वर वर्ण :– स्वतंत्र रूप से बोले जाने वाले वर्ण स्वर कहलाते है। हिन्दी वर्णमाला में कुल ग्यारह (11) स्वर ध्वनियाँ शामिल की गयी है ।

जैसे – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

स्वरो का वर्गीकरण :– मुख्यतः 5 आधार पर वर्गीकरण किया गया है।

1. मात्राकाल के आधार पर – 3 प्रकार है ।

(i) ह्रस्व स्वर – वे स्वर जिनके उच्चारण मे कम समय लगता है हस्व स्वर कहलाते है।

जैसे – अ, इ, उ, ऋ (कुल संख्या – 4)

नोट :– (इनको एकमात्रिक स्वर, मूल स्वर भी कहते है)

(ii) दीर्घ स्वर – वे स्वर जिनके उच्चारण मे मुल स्वर से अधिक समय/ दुगुना समय लगता है। वे दीर्घ स्वर कहलाते है। आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, (कुल संख्या –7)

(iii) प्लुत स्वर – जिनके उच्चारण में तीन मात्राओ का समय लगता है । स्वर के प्लुत रूप को दर्शाने के लिए उनके साथ 3 का चिह्न लगाया जाता है ।

जैसे – अ^3, आ^3, इ^3, ई^3, उ^3, ऊ^3, ए^3, ऐ^3, ओ^3, औ^3,

(2) उच्चारण के आधार पर :– (2 प्रकार है)

(i) अनुनासिक स्वर – स्वर का उच्चारण करने पर वायु मुख व नाक दोनो से बाहर निकलती है ।

नोट – अनुनासिक रूप को दर्शाने के लिए चन्द्रबिंदु का प्रयोग होता है ।

जैसे – अँ आँ इँ ईं उँ ऊँ एँ, ऐं ओं औं

(ii) अननुनासिक/निरनुनासिक स्वर – जब किसी स्वर का उच्चारण करनें पर श्वास वायु केवल मुख से ही बाहर निकलती है । वह अननुनासिक/ निरनुनासिक स्वर कहलाता है।

बिना चन्द्रबिन्दू के अपने मूल रूप में लिखे हुए स्वर अनुनासिक माने जाते है ।

जैसे – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ए, ऐ, ओ, औ,

(3) जिह्वा के आधार पर – (3 प्रकार है)

(i) अग्र स्वर :– उच्चारण करने पर जीभ के आगे वाले भाग मे सर्वाधिक कम्पन होना ।

जैसे – इ, ई, ए, ऐ

(ii) मध्य स्वर – उच्चारण करने पर जीभ के मध्य भाग में कम्पन – अ

(iii) पश्च स्वर – उच्चारण करने पर जीभ के पिछले भाग में अधिक कम्पन ।

जैसे – आ, उ, ऊ, ओ, औ , ऑ

पहचान :– निम्न सारणी के माध्यम से अग्र, पश्च, मध्यम भाग को जाने

अ – मध्य
इ ई ए ऐ – अग्र
आ उ ऊ ओ औ – पश्च

(4) होठों की गोलाई के आधार पर – 2 प्रकार है ।

(i) वृत्ताकार – उच्चारण करने पर होठों का आकार गोल हो जाना।

जैसे :– उ, ऊ ओ, औ

(ii) अवृत्ताकार – उच्चारण करने पर होठों का आकार गोल न होकर ऊपर–नीचे फैलना।

जैसे – अ, आ, इ, ई ए, ऐ

(5) **मुखाकृति के आधार पर – 04 प्रकार है।**

(i) संवृत स्वर – उच्चारण करने पर मुँह का कम खुलना। जैसे – इ, ई, उ, ऊ

(ii) अर्द्ध संवृत स्वर – उच्चारण करने पर मुँह का संवृत से थोडा ज्यादा खुलना – ए, ओ

(iii) विवृत – उच्चारण करने पर मुख का सबसे ज्यादा/पूरा खुलना। जैसे – आ

(iv) अर्द्धविवृत – उच्चारण करने पर मुँह का विवृत से थोडा कम खुलना। जैसे – अ, ऐ, औ, ऑ

व्यंजन वर्ण

स्वर की सहायता से बोले जाने वाले वर्ण व्यंजन कहलाते है।

हिन्दी वर्णमाला में कुल 35 मूल (33 + 2 उत्क्षिप्त) व्यंजन ध्वनियाँ होती है ।

जिनको तीन भागों में बाँटा गया है ।

(i) स्पर्श व्यंजन – (27) (मूल 25 + 2 उत्क्षिप्त)

(ii) अंतः स्थ व्यंजन – (04)

(iii) ऊष्म व्यंजन – (04)

(i) स्पर्श व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर श्वास वायु हमारे मुख के किसी अंग को स्पर्श करते मुख से बाहर निकलती है वह स्पर्श व्यंजन कहलाते है ।

स्पर्श व्यंजन को 5 भागों में बाँटा गया है –

(अ) 'क' वर्ग – क् ख् ग् घ् ङ्.

(ब) 'च' वर्ग – च् छ् ज् झ् ञ्

(स) 'ट' वर्ग – ट् ठ् ड् ढ् ण्

(द) 'त' वर्ग – त् थ् द् ध् न्

(य) 'प' वर्ग – प् फ् ब् भ् म्

(ii) अंतः स्थ व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर सर्वप्रथम हमारे मुख के अन्दर स्थित स्वर तंत्रियो में कम्पन होता है, व उसके बाद श्वास वायु मुख में बाहर निकलती है तो वह अन्तःस्थ व्यंजन कहलाती है ।

कुल अन्तः स्थ व्यंजन – 4 है ।

जैसे :– य् व् र् ल्

(iii) ऊष्म व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर श्वास वायु मुख से बाहर निकलते समय हल्की गर्म हो जाती है, तो वह ऊष्म व्यंजन कहलाता है।

कुल ऊष्म व्यंजन – 4 है।

जैसे – श, स, ष, ह

संयुक्त व्यंजन – इसी श्रेणी मे 4 व्यंजन शामिल किये जाते है ।

क्ष – ष् + अ

त्र – त् + र + अ

ज्ञ – ज् + ञ्+ अ

श्र – श् + र् + अ

व्यंजनों का वर्गीकरण

व्यंजनों का वर्गीकरण – मुख्यतः 2 प्रकार का है ।

(1) उच्चारण स्थान के आधार पर

(2) प्रयत्न के आधार पर

(1) उच्चारण स्थान के आधार पर –

स्वर – युक्त व्यंजन व उनका वर्गीकरण–

(अ) उच्चारण स्थान के आधार पर –

उच्चारण स्थान	नाम ध्वनि	वर्ग	व्यंजन	स्वर
कंठ	कंठ्य	क वर्ग	क ख ग घ ङ ह	अ आ
तलु	तालव्य	च वर्ग	च छ ज झ ञ य श	इ ई
मूर्द्धा	मूर्द्धन्य	ट वर्ग	ट ठ ड ण ड़ ढ़ ष र	ऋ
दाँत	दन्त्य	त वर्ग	त थ द ध न ल स	
ओष्ठ	ओष्ठ्य	प वर्ग	प फ ब भ म	उ ऊ
कंठ व तालु	कंठ्य–तालव्य			ए ऐ
दाँत व ओष्ट	दन्तोष्ठ्य		व	
कंठ व ओष्ठ	कंठोष्ठ्य			ओ औ
नासिक्य			ड्., ञ् ण् न् म्	

2) प्रयत्न के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण

मुख्यतः 3 भागों में बाँटा गया है –

(i) कंपन के आधार पर

(ii) श्वास वायु के आधार पर

(iii) उच्चारण के आधार पर

(i). कम्पन्न के आधार पर व्यंजन का वर्गीकरण

a) **अघोष :–** वे ध्वनियाँ जिनका उच्चारण करते समय स्वरतंत्रियो में कम्पन्न नहीं होता है अघोष कहलाते है। इसमें वर्ग का पहला,दुसरा वर्ण तथा श, स, ष आते है।

b) **घोष/सघोष :–** वे ध्वनियाँ जिनका उच्चारण करते समय स्वर तंत्रियों मे कम्पन्न होता है घोष/सघोष कहलाते है

इसमे वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवा वर्ण तथा य. र, ल, व, ह और सभी स्वर आते है।

(ii). श्वास वायु के आधार पर व्यंजन का वर्गीकरण

a) अल्प प्राण :– ऐसे वर्ण जिनका उच्चारण करते समय कम वायु बहार निकलती हो, अल्प प्राण कहलाते हैं।

b) महाप्राण :– ऐसे वर्ण जिनका उच्चारण करते समय अधिक वायु की आवश्यकता होती है, महाप्राण कहलाता है।
इसमे दुसरा, चौथा वर्ण तथा श,स,ब,ह आते है।

(iii).उच्चारण के आधार पर –

इस आधार पर व्यंजन 8 प्रकार के होते है ।

a. स्पर्शी व्यंजन (16) क, ख, ग, घ, ट, ठ, ड, ढ, त, थ, द, ध, प, फ, ब, भ
b. स्पर्श संघर्शी व्यंजन (4) – च, छ, ज, झ
c. संघर्षी व्यंजन (4) – ष, श, स, ह
d. नासिक व्यंजन (5) – ङ, ञ, ण, न, म
e. उत्क्षिप्त व्यंजन (2) – ड, ढ
f. प्रकंपित व्यंजन (1) – र
g. पार्श्विक व्यंजन (1) – ल
h. संघर्षहीन व्यंजन (2) – य, व

परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण तथ्य ("वर्ण विचार" से संबंधित)

- दीर्घ स्वर को संयुक्त स्वर के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि दीर्घ स्वरों की रचना प्राय दोनों स्वरों के मिलने से होती है।
- सात दीर्घ स्वरों को भी दो भागों समानाक्षर स्वर, संधि स्वर के रूप में विभाजित किया जाता है।

	समानाक्षर स्वर	**संधि स्वर**
(i)	आ – अ + अ	ए – अ + इ
(ii)	ई – इ + इ	ऐ – अ – ए
(iii)	ऊ – उ + उ	औ – अ + ओ

- प्लुत स्वर वर्गीकरण का सर्वप्रथम साक्ष्य पाणिनि की अष्टाध्यायी रचना में मिलता है।
- हिन्दी वर्णमाला में कुछ व्यंजन शब्दों के नीचे नुक्ता (बिन्दु) का प्रयोग किया जाता है, जिन्हे आगत/गृहीत व्यंजन कहा जाता है।
- आगत व्यंजनों की कुल संख्या 05 होती है।

क़ – क़रीब
ख़ – ख़ाना
ग़ – ग़म
ज़ – ज़रा
फ़ – फ़न, फ़ाइल (अंग्रेजी)

अंग्रेजी से गृहीत स्वर.
ऑ (é)
जैसे – कॉलेज, डॉक्टर

- हिन्दी भाषा में आगत व्यंजनो का आगमन अरबी/फारसी, अग्रेजी भाषा से हुआ है।
- हिन्दी भाषा में नुक्ता व्यंजन की शुरूआत का श्रेय हिन्दी विद्वान "विप्रसाद सितारे हिंद" को जाता है।
- काकल वर्ण के अन्तर्गत, (:) विसर्ग को शामिल किया जाता है।
- वर्त्स वर्णो में न, स, ल को शामिल किया जाता है।
- इसकी कुल संख्या चार होती है।
(1) जिह्वा (2) अधरोष्ठ (नीचे का होंठ)
(3) स्वर तंत्रियाँ (4) कोमल तालु
- तालु उच्चारण स्थान में आनें वाले वर्णो को कोमल तालव्य व कठोर तालव्य के रूप में दो भागो में विभाजित किया गया है।
- हिन्दी वर्णमाला में अं (अनुस्वार), अः (विसर्ग) को अयोगवाह वर्ण कहा जाता है। क्योंकि इन वर्णों को न तो स्वरों में जोड़ा जाता है व न ही व्यंजनों में अतः अयोगवाही वर्ण कहलाते है।
- हल् चिह्न (्) व्यंजन के स्वर रहित होनें का परिचायक है । स्वर रहित व्यंजन के साथ हल् का चिह्न लगाया जाता है या फिर खड़ी पाई वाले व्यंजन चिह्नो की खड़ी पाई हटा दी जाती है। उसके अर्द्धरूप का प्रयोग किया जाता है।
जैसे– विद्या, पाठ्य, अपराह्न, पट्टा आदि।

1. नांद या संवार वर्ण – सभी घोष वर्णों को ही कहा जाता है।
2. विवार या श्वास वर्ण – सभी अघोष वर्णों को ही कहा जाता है।
3. स्पृष्ठ वर्ण – सभी स्पर्श व्यंजन वर्णों को ही कहा जाता है।
4. ईशत्स्पृष्ट वर्ण – अन्तस्थ व्यंजन (य,र,ल,व) वर्णों को ही कहा जाता है।
5. ईशद्विवृत वर्ण – उष्म व्यंजन (ष, श, स, ह)
6. रक्त वर्ण –प्रत्येक वर्ग का पाँचवा वर्ण
7. सोष्म व्यंजन वर्ण – प्रत्येक वर्ग का दूसरा व चौथा वर्ण

नोट – हिन्दी वर्णमाला में मूल रूप से 11 स्वर व 33 व्यंजन सहित कुल 44 वर्ण होते है।

हिन्दी वर्णमाला की वर्तमान में अपवादित स्थिति को सारणी के माध्यम से समझें।

स्वर	**व्यंजन**	**कुल**
स्वर 11	व्यंजन 33	44
–	ड़, ढ़ + (2) (उत्क्षिप्त व्यंजन)	46
–	अं, अः + (2) (अयोगवाह)	48
–	क्ष, त्र, ज्ञ, श्र + (4) संयुक्त व्यंजन	52
	क़ ख़ ग़ ज़ फ़ + 5 गृहीत व्यंजन	57

नोट – सर्वमान्य मत हिन्दी वर्णमाला में कुल 44 वर्ण होते हैं।

उत्क्षिप्त वर्ण

जिन ध्वनियों के उच्चारण में जिह्वा मूर्ध्दा को स्पर्श कर तुरन्त नीचे गिरती है, उन्हे उत्क्षिप्त वर्ण कहते हैं।

जैसे – ड. ढ.

नियम – 1. यदि शब्द की शुरूआत उत्क्षिप्त वर्णों से हो तो लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आता है ।

जैसे – डमरू, ढोलक, डलिया, ढक्कन, डाली

नियम – 2. यदि शब्द के अन्तर्गत इनसे पहले आधा वर्ण आता है तो भी लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आता है।

जैसे – पण्डित, बुड्ढा, अड्डा, खण्ड, मण्डल आदि ।

- उपर्युक्त दोनों नियमों के अलावा प्रत्येक स्थिति में इनके नीचे बिन्दु आता है।
  जैसे – पढ.ाई, लड.ाई, सड़क, पकड़ना, ढूँढना आदि।

रकार/रेफ या र संबंधित नियम

नियम 1. – यदि र् के बाद व्यंजन वर्ण आए तो र् को उसी व्यंजन वर्ण के उपर लिखते हैं अर्थात् जिस व्यंजन वर्ण से पहले र् का उच्चारण किया जाता है, र को उसी व्यंजन वर्ण के उपर लिखा जाता है।

जैसे – कर्म, धर्म, वर्ण, दर्शक, स्वर्ग, अर्थात्, पुनर्जन्म, पुनर्निमाण, आशीर्वाद।

नियम 2. – यदि र् से पहले व्यंजन वर्ण आए तो र् को उसी व्यंजन वर्ण के मध्यय में लिखा जाता है।

जैसे – प्रकाश, प्रभात, प्रेम, क्रम, भ्रम, भ्रष्ट, भ्राता

2 CHAPTER वाक्य रचना

नियम 1

किसी वाक्य मे दो अधिकरण एक साथ आने पर पहले कालवाची फिर स्थानवाची अधिकरण का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण –

सुमन कॉलेज मे दुपहर मे ही जाती है । (अशुद्ध)

सुमन दुपहर मे ही कॉजेल मे जाती है । (शुद्ध)

चोर महल मे दुपहर मे ही घुस गया । (अशुद्ध)

चोर दुपहर मे ही महल मे घुस गया । (शुद्ध)

नियम 2

यदि वाक्य मे दो कर्म एक साथ आते है तो गोण कर्म सजीव का प्रयोग पहले किया जाता है और प्रधान कर्म निर्जीव का प्रयोग क्रिया के पास में किया जाता है।

उदाहरण –

राजा ने धन भिखारी को दिया। (अशुद्ध)

राजा ने भिखारी को धन दिया। (शुद्ध)

मोहन दूध गाय का दुह रहा हैं। (अशुद्ध)

मोहन गाय का दूध दुह रहा है। (शुद्ध)

नियम 3

यदि किसी वाक्य मे एक से अधिक कारको का प्रयोग किया जाता है तो उनका क्रम निम्नानुसार होता है –

कर्ता, अधिकरण (में), अपादान (से), सम्प्रदाय (के लिए), कारण (से), कर्म (में को)

उदाहरण –

सुधांशु ने हिमांशु के लिए घर की प्रयोगशाला मे छोटा कम्प्यूटर बनाया । (अशुद्ध)

सुधांशु ने घर की प्रयोगशाला मे हिमांशु के लिए छोटा कम्प्यूटर बनाया । (शुद्ध)

मै साइकिल से पढने के लिए घर से विद्यालय में जाता हूँ। (अशुद्ध)

मै विद्यालय मे घर से पढने के लिए साइकिल से जाता हूँ। (शुद्ध)

नियम 4

यदि स्थानवाचक तथा कालवाचक क्रिया विशेषण वाक्य मे एक साथ आ जाता है या फिर एक साथ नही आकर अलग – अलग जगह फिर एक साथ आता है तो इनका प्रयोग कर्ता से पहले या बाद मे कही पर भी किया जा सकता है।

उदाहरण –

आज मै महाविद्यालय नही जाऊँगा । (अशुद्ध)

मै आज महाविद्यालय नही जाऊँगा । (शुद्ध)

मोहन यहाँ अवश्य आयेगा । (अशुद्ध)

यहाँ मोहन अवश्य आयेगा । (शुद्ध)

नियम 5

निषेधात्मक नही शब्द का प्रयोग क्रिया से ठीक पूर्व करना चाहिए।

उदाहरण –

वह मेरा दोस्त नही है ।

वह खाना नही खायेगा ।

नियम 6

ही, तो भर, भी, आदि अव्ययो का प्रयोग जिस शब्द पर जोर देना हो उसी के साथ प्रयोग करना चहिए।

उदाहरण –

हम भी दिल्ली जायेंगे।

हम दिल्ली भी जायेंगे।

मुझे तो जाना है।

मुझे जाना तो है।

तत्सम व तद्भव शब्दों की पहचान

- नियम : अनुनासिका का प्रयोग सदैव तद्भव शब्दों के साथ होता है।

तत्सम	तद्भव
पंच	पाँच
अक्षि	आँख
चन्द्र	चाँद
अंधकार	अँधेरा
वंशी	बॉसुरी
ग्राम	गॉव

- उत्क्षिप्त ड, ढ़ वर्णो का प्रयोग सदैव तद्भव शब्दों के साथ होता है।

तत्सम	तद्भव
वट	बड
मर्कटी	मकडी
शुंड	सूँड
घट	घडा
घटिका	घडी
लोमशा	लोमड़ी

ToppersNotes Unleash the topper in you

- नियम :– संयुक्त व्यंजन

  क्ष त्र ज्ञ श्र इन संयुक्त व्यंजनो का प्रयोग अधिकतर तत्सम शब्दो के साथ होता हैं ।

तत्सम	तद्भव
अश्रु	आँसू
क्षेत्र	खेत
अक्षत	अच्छत
क्षत्रिय	खत्र

- ''व'' से प्रारम्भ होने वाले शब्द अधिकतर तत्सम होते है और ''ब'' से प्रारम्भ होने वाले शब्द तद्भव होते है।

तत्सम	तद्भव
वसन्त	बसन्त
वधू	बहू / बधू
वाणी	बाणी
वनवास	बनवास
वाटिका	बाटिका
वशिष्ट	बशिष्ठ

- ''थ'' से प्रारम्भ होने वाले शब्द अधिकतर तत्सम होते है और ''ज'' से प्रारम्भ होने वाले शब्द तद्भव होते है।

तत्सम	तद्भव
यज्ञमान/यजमान	जजमान
यशोदा	जशोदा
योग	जोग
यश	जस
यत्न	जतन
यज्ञ	जज्ञ / जग

- स्थ व स्त से प्रारम्भ होने वाले शब्द अधिकांशतः तत्सम होते है और ''थ'' से प्रारम्भ होने वाले तद्भव होते है।

तत्सम	तद्भव
स्थान	थान
स्तन	थन
स्थिर	थिर
स्थल	थल
स्तम्भ	खंबा (खंभा – शुद्ध)

- अधिकांश आधे – अधूरे वर्णो से युक्त षब्दो का प्रयोग तत्सम शब्दो में होता है ।

तत्सम	तद्भव
कर्तरी	कैची
कर्त्तव्य	करतब
प्रकट	प्रगट

- ऋ का प्रयोग अधिकांशतया तत्सम शब्दो के साथ होता है।

तत्सम	तद्भव
गृह	घर
घृत	घी
कृष्ण	कान्ह / किसन
कृषक	किसान

- ''ष'' का प्रयोग अधिकांशतया तत्सम शब्द के साथ प्रयोग होता है और ''स'' का प्रयोग तद्भव शब्दो के साथ होता है।

तत्सम	तद्भव
दशम	दसमी
दश	दस
एकादशी	एकादसी
शिर	सिर

1. अनावश्यक शब्दो के कारण वाक्य अशुद्धि

अशुद्ध – मै प्रातः काल के समय घूमने जाता हूँ ।

शुद्ध – मै प्रातः काल घूमने जाता हूँ ।

अशुद्ध	शुद्ध
जज ने उसे मृत्यु दण्ड की सजा दी।	जज ने उसे मृत्युदण्ड दिया।
मोहन बहुत सज्जन पुरुश है।	मोहन बहुत सज्जन है।
मै रविवार के दिन घूमने जाता हूँ।	मैं रविवार को घूमने जाता हूँ।
अन्तिम निष्कर्ष क्या निकला?	निष्कर्ष क्या निकला ?

2. अनुपयुक्त शब्दो के कारण वाक्य अशुद्धि

सीता राम की स्त्री थी।(अशुद्ध)

सीता राम की पत्नी थी । (शुद्ध)

बन्दूक एक अस्त्र है । (अशुद्ध)

बन्दुक एक शस्त्र है । (शुद्ध)

कोहिनूर एक अमूल्य हीरा है । (अशुद्ध)

कोहिनूर एक बहुमूल्य हीरा है । (शुद्ध)

तलवार की लोक पर चलना है । (अशुद्ध)

तलवार की धार पर चलना है । (शुद्ध)

उस समस्या की औषधि मेरे पास है । (अशुद्ध)

इस समस्या का समाधान मेंरे पास है । (शुद्ध)

3. लिंग संबंधी वाक्य अशुद्धि

आपका कमीज फट गया है। (अशुद्ध)

आपकी कमीज फट गई है। (शुद्ध)

मुझे व्याकरण अच्छी लगती है। (अशुद्ध)

मुझे व्याकरण अच्छा लगता है। (शुद्ध)

यह एकांकी बहुत अच्छी है। (अशुद्ध)

यह एकांकी बहुत अच्छा है। (शुद्ध)

मेरे मित्र की पत्नी विद्धान है। (अशुद्ध)

मेरे मित्र की पत्नी विदुशी है। (शुद्ध)

मीरा एक प्रसिद्ध कवि थी। (अशुद्ध)

मीरा एक प्रसिद्ध कवयित्री थी। (शुद्ध)

माताजी आप क्या कर रहे है। (अशुद्ध)

माताजी आप क्या कर रही है। (शुद्ध)

4. वचन संबंधी वाक्य अशुद्धि

यह मेरा ही हस्ताक्षर है। (अशुद्ध)

ये मेरे ही हस्ताक्षर है। (शुद्ध)

यहाँ सभी वर्ग के लोग रहते है। (अशुद्ध)

यहाँ सभी वर्गो के लोग रहते है। (शुद्ध)

अभी तो दस बजा है। (अशुद्ध)

अभी तो दस बजे है। (शुद्ध)

भ्रमर पुष्पों के परागो को चूसता है। (अशुद्ध)

भ्रमर पुष्पों के पराग चूसता है। (शुद्ध)

5. क्रम भंग संबंधी वाक्य अशुद्धि

यहाँ पर शुद्ध गाय का दूध मिलता हैं। (अशुद्ध)

यहाँ पर गाय का शुद्ध दूध मिलता है। (शुद्ध)

बच्चे को काटकर फल खिलाओ। (अशुद्ध)

बच्चे को फल काटकर खिलाओ। (शुद्ध)

ममता के गले में एक मोतियों का हार है। (अशुद्ध)

ममता के गले में मोतियों का एक हार है। (शुद्ध)

तुम बाजार जाओ तो एक फूलो की माला भी लेते आना। (अशुद्ध)

तुम बाजार जाओ तो फूलो की एक माला भी लेते आना। (शुद्ध)

6. कारक संबंधी वाक्य अशुद्धि

बन्दर पेड़ में बैठे है। (अशुद्ध)

बन्दर पेड़ पर बैठे है। (शुद्ध)

11 बजने को 40 मिनट है। (अशुद्ध)

11 बजने में 40 मिनट है। (शुद्ध)

गुरुजी के ऊपर श्रद्धा रखे। (अशुद्ध)

गुरुजी के प्रति श्रद्धा रखो। (शुद्ध)

पुजारी जी ने भक्तो के लिए भजन सुनाया। (अशुद्ध)

पुजारी जी ने भक्तो को भजन सुनाया। (शुद्ध)

आज बजट के ऊपर बहस होगी। (अशुद्ध)

आज बजट पर बहस होगी। (शुद्ध)

7. सर्वनाम संबंधी वाक्य अशुद्धि

तुम तुम्हारा काम करो। (अशुद्ध)

तुम अपना काम करो। (शुद्ध)

यह काम तेरे से नही होगा। (अशुद्ध)

यह काम तुझसे नही होगा। (शुद्ध)

यह मेंरे दादाजी है। (अशुद्ध)

ये मेंरे दादाजी है। (शुद्ध)

दूध मे कौन गिर गया है ? (अशुद्ध)

दूध में क्या गिर गया है ? (शुद्ध)

तू बडा हो गया तुम्हारी शादी करवा दूँ

तु बडा हो गया है तेरी शादी करवा दू

8. क्रिया संबंधी वाक्य अशुद्धि

वहाँ कौन – कौन आया था ? (अशुद्ध)

वहाँ कौन – कौन आये थे ? (शुद्ध)

वास्को–डी–गामा ने भारत का आविश्कार किया। (अशुद्ध)

वास्को–डी–गामा ने भारत की खोज की। (शुद्ध)

मैने तुम्हारी बहुत प्रतीक्षा देखी। (अशुद्ध)

मैने तुम्हारी बहुत प्रतीक्षा की है। (शुद्ध)

9. मुहावरे संबंधी वाक्य अशुद्धि

पानी पीकर नाम पूछना। (अशुद्ध)

पानी पीकर जात पूछना। (शुद्ध)

चोर दुम दबाकर चला गया। (अशुद्ध)

चोर दुम दबाकर भाग गया। (शुद्ध)

युग्म शब्द – दुम – पूँछ – द्रुम – वृक्ष

प्रधानमंत्री ने देश का धुँआ दार दौरा किया। (अशुद्ध)

प्रधानमंत्री ने देश का तूफानी दौरा किया। (शुद्ध)

दुश्मनो ने हथियार रख दिए। (अशुद्ध)

दुश्मनों ने हथियार डाल दिए। (शुद्ध)

10. संयोजन शब्द संबंधी वाक्य अशुद्धि

तुम जहाँ भी जाओ उस जगह मुझे भी ले चलो। (अशुद्ध)

तुम जहाँ भी जाओ वहाँ मुझे भी ले चलो। (शुद्ध)

मै ज्यों ही विद्यालय पहुँचा वैसे ही घण्टी बज गई। (अशुद्ध)

मै ज्यों ही विद्यालय पहुँचा त्यों ही घण्टी बज गई। (शुद्ध)

जब राम ने लंका में प्रवेश किया तो बन्दरो ने बहुत आनन्द मनाया। (अशुद्ध)

जब राम ने लंका में प्रवेश किया तब बन्दरों ने बहुत आनन्द मनाया। (शुद्ध)

11. विराम चिह्न संबंधी अशुद्धियाँ

अरे तुम कब आये। (अशुद्ध)

अरे ! तुम कब आये। (शुद्ध)

तुलसीदास ने रामचरित्र मानस् की रचना की। (अशुद्ध)

तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' की रचना की। (शुद्ध)

तुम्हारा क्या नाम है। (अशुद्ध)

तुम्हारा क्या नाम है ? (शुद्ध)

12. विशेषण सबंधी वाक्य अशुद्धि

ईडन एक लम्बा मैदान है। (अशुद्ध)

ईडन एक विशाल मैदान है। (शुद्ध)

गंगा नदी का पाट बहुत लम्बा है। (अशुद्ध)

गंगा नदी का पाट बहुत चौडा है। (शुद्ध)
राम का कद मोहन से बडा है। (अशुद्ध)
राम का कद मोहन से लम्बा है। (शुद्ध)

13. वर्तनी संबंधी अशुद्धि

कब्बडी मे काका का क्या काम। (अशुद्ध)
कबड्डी मे काका का क्या काम। (शुद्ध)
पढने मे आलस्यता ठीक नही। (अशुद्ध)
पढने मे आलस्य ठीक नही। (शुद्ध)
निरपराधी का सजा नही मिलनी चाहिए। (अशुद्धि)
निरपराध को सजा नही मिलनी चाहिए। (शुद्धि)
पूजनीय पिताजी आ रहे है। (अशुद्ध)
पिताजी आ रहे है। (शुद्ध)
मै आपके उज्जवल भविष्य की कामना करता हुँ। (अशुद्धि)
मै आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ। (शुद्धि)

Toppersnotes Unleash the topper in you

3 CHAPTER

विराम चिह्न और उनके प्रयोग

'विराम' का अर्थ है– विश्राम अथवा ठहराव। भाषा द्वारा जब हम अपने भावों को प्रकट करते हैं तब एक विचार या उसके कुछ अंश को प्रकट करने के पश्चात् हम थोड़ा रुकते हैं, इसे ही 'विराम' कहते हैं और इसे स्पष्ट करने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें ही 'विराम–चिह्न' कहते हैं।

विराम–चिह्नों के गलत प्रयोग से अर्थ का अनर्थ हो जाता है यानी अर्थ बदल जाता है । नीचे लिखे वाक्यों को देखें:

रोको, मत जाने दो। (रोक लो, वह जाने न पाए)
रोको मत, जाने दो। (छोड़ दो, मत रोको)

हिन्दी भाषा में निम्नलिखित प्रकार के चिह्नों का प्रयोग किया जाता है । इन चिह्नों को दो भागों में बॉटा जा रहा है–विराम–चिह्न और मनोभाव या भाव–चिह्न ।

1. विराम–चिह्न

(क) पूर्ण विराम (Full stop)– (। या .)

यह चिह्न एक अभिप्राय की समाप्ति को सूचित करता है । अतएव, प्रत्येक वाक्य की समाप्ति पर इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है ।

जैसे– हमें पर्यावरण को नष्ट होने से बचाना चाहिए। पेड–पौधे प्रकृति में संतुलन बनाए रखते हैं।

(ख) अपूर्ण विराम या उपविराम (Colon)– (:)

जहॉ एक वाक्य के समाप्त हो जाने पर भी विवक्षित भाव समाप्त नहीं होता, आगे की जिज्ञासा बनी रहती है, वहॉ पूर्ण विराम से कम देर तक ठहरते हुए आगे तब तक बढते जाते हैं, जब तक वक्तव्य पूरा नहीं होता। उस जगह पर अपूर्ण विराम का प्रयोग देखा जाता है

जैसे– शब्द और अर्थ के बीच तीन में से कोई संबंध हो सकता है : **अभिधा, लक्षणा, व्यंजना।**

(ग) अर्द्ध विराम (Semicolon)– (;)

1) **जहाँ अपूर्ण विराम** से भी कम ठहराव का संकेत होता है, वहाँ इस तरह के चिह्न का प्रयोग होता है।
जैसे – हमने देखा है कि जिन्दगी का रास्ता कितना लम्बा और कठिन है; यह देखा है कि हर कदम पर कठिनाई कम होने के बजाय और बढ़ती ही जाती है, यह भी देखा है कि किस तरह लोग अपने जीवन की वर्तमान परिस्थितियों से ऊबकर मौत तक को गले लगा लेते है ।

2) यदि खंडवाक्य का आरंभ वरन्, पर, परन्तु, किन्तु, क्योंकि, इसलिए, तो भी आदि शब्दों से हो तो उसके पहले इसका प्रयोग करना चाहिए ।
जैसे – आरा, छपरा और बॉकीपुर के लोगों की आँखें डबडबाई हुई हैं; क्योंकि अभी–अभी पता चला हैं कि वीर कुँवर सिंह परलोक सिधार गए ।

3) लगातार आनेवाले पदबंधों के बीच भी अर्द्ध–विराम का प्रयोग किया जाता है।
जैसे – सुबह के शीतल, मंद, सुगंधित समीरन के झोंकों से कलियाँ खिलखिला उठती हैं; वृक्षों की छोटी–बड़ी टहनियाँ झूम उठती हैं; रात की नींद का आनंद लेकर जीव–जगत पूर्वदिन का क्लेश कौन भूल जाता है; पक्षियों के सुमधुर कलरव से वातावरण गुंजायमान हो जाता है और धीरे–धीरे बाल अरूण अंधकार रूपी राक्षस को लील जाता है।

(घ) अल्प विराम (Comma)– (,)

अल्पविराम का क्षेत्र बड़ा व्यापक होता है । इसमें बहुत कम ठहराव होता है । इस चिह्न का प्रयोग निम्नलिखित स्थानों पर होता है–

1) जहाँ एक प्रकार के अनेक शब्द या शब्द समूह आये और योजक (और, तथा, एवं व आदि) का प्रयोग केवल अंतिम दो के बीच आये, वहाँ शेष दो के बीच अल्पविराम आता है ।
जैसे–राजा दशरथ के चार लड़के थे– राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न । {दो संज्ञाओं के बीच)
   - चारों भाई सुन्दर, सुशील, नम्र, दयालु और सबल थे । {दो विशेषणों के बीच)
   - चारो साथ–साथ खेलते, खाते, पढ़ते और टहलते थे । {दो क्रियाओं के बीच)

2) जहाँ योजक छोड़ दिया जाता है । जैसे–सोनी बहुत खुश हुई, वह माँ बनने वाली थी न। विध्वंस एक दिन में हो सकता है, निर्माण नहीं।

3) दो बडे वाक्यांशों के बीच।
जैसे–परन्तु उनके कष्ट सहन से, उन कष्टों को मानव–कल्याण के प्रयत्नों में ढालने की उनकी शक्ति से आधुनिक युग को अजस्त्र जीवन–प्रेरणा मिली है।

4) हाँ, नहीं, जी, बस, अतः अतएव, निष्कर्षत; अच्छा आदि से शुरू होने वाले में इन शब्दों के बाद ।
जैसे–
जी हॉ, मैने बार–बार सावधान किया था उसे।
अच्छा, अवश्य जाऊँगा ।

5) संबोधित संज्ञा के बाद–
प्रखर, जरा इधर तो आइए ।

6) दी गई संज्ञा के विषय में विशेष सूचना के रूप में आनेवाली संज्ञा या सर्वनाम के पहले और बाद में । जैसे– रावण, लंका का राजा, बडा ही विद्वान था। बगदाद, इराक की राजधानी, बहुत ही सुन्दर महानगर है।

7) यदि कोई वाक्य प्रत्यक्ष कथन मे (Direct speech) हो तो मुख्य कथन के पहले जैसे– वैज्ञानिकों ने कहा है, ''पानी अमृत है । इसे बर्बाद मत करो ।''

8) जब परस्पर संबंध रखने वाले दो शब्दों के बीच में पद, वाक्यांश या खंडवाक्य आकर उन्हें अलग–अलग कर दे तो उनके दोनों तरफ प्रयोग करें । जैसे–

- शिम्पी काकी, जिसके विषय में मै तुमसे बातें कर रहा था, बहुत ही अच्छा गाती है।

(i) नित्य–संबंधी शब्दों के जोड़ का दूसरा शब्द लुप्त रहे तो वहाँ भी यानी वाक्य में जहाँ कोई पद छूट गया हो और वहाँ उसकी अनिवार्यता लगे, उस स्थल पर अल्पविराम का प्रयोग होता है।
जैसे– वह जहाँ जाता है, बैठ जाता है। (अल्पविराम की जगह 'वहीं' की अनिवार्यता महसूस की जा रही है।)
वह कब तक आएगा, कहा नहीं जा सकता {'यह' छूटा है)

2. भावचिह्न

(क) प्रश्नबोधक (Question)– (?)

प्रश्न का बोध करानेवाले वाक्य के अंत में इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है । साधारणतः, कौन, क्या, कब, कहाँ, कैंसे, क्यों, किसलिए आदि का प्रयोग रहने या यदि इनसे प्रश्न का भाव व्यंजित हो तो वाक्यान्त में इस चिह्न का प्रयोग किया जाएगा ।
जैसे–

- वह क्या खाता है?
- वहाँ कौन था?
- दादाजी कब आएँगे?

परन्तु, यदि प्रश्न का भाव व्यंजित नहीं हो तो प्रश्नवाचक चिह्न नहीं आएगा। जैसे–

- मैं क्या बताऊँ, श्रीमान! वह कब और कहाँ जाता हैं, समझ नहीं पा रहा ।

नोट : ध्यान रहे, प्रश्न किया जाता है, पूछा नहीं । जैसे– शिक्षक ने प्रश्न किया । बच्चा प्रश्न करता है ।

(ख) विस्मयादिबोधक चिह्न (Exclamation)– (!)

विस्मय, हर्ष, शोक, घृणा, प्रेम आदि भावों को प्रकट करनेवाले शब्दों के आगे इसका प्रयोग होता है । जैसे–

- शाबाश ! इसी तरह सफल होते रहो ।
- आह ! कितना कठिन समय है ।
- छिः ! कितनी गंदी आदत है ।
- नीच ! तुझे इसकी सजा जरूर मिलेगी है ।

(ग) निर्देषक चिह्न (Dash) (–)

इस चिह्न का प्रयोग निम्नलिखित स्थलों पर होता है–

1) जहॉ उद्धरण देना है। जैसे–
   - भीषण गर्मी से– पशु पक्षी, गाय, घोड़ा, कोयल–सभी परेशान थे ।
   - इतने में कोई गरजा– ''रास्ता छोड़ो ।''
2) वार्तालाप में वक्ता के नाम के बाद। जैसे–
   रणधीर– तुम कब आओगे?
3) जहाँ वाक्य टूटता है। जैसे–
   इस घटना को अंजाम दिया आपमें से ही किसी ने – खैर, छोडिए इन बातों को–अंशुमान कैसा है?
   मेरी सहेली ने– ईश्वर उसका भला करे– संकट में मेरी सहायता की ।
4) वाक्य में किसी पद का अर्थ अधिक स्पष्ट करना हो या किसी बात को दुहराना हो । जैसे–
   वह उनकी एक बात पर जान देने को तैयार है– केवल एक बात पर ।
5) बार बार अर्थ की स्पष्टता के लिए । जैसे–
   आत्मनिर्भरता– अपने ऊपर भरोसा– अपनी मेहनत का सहारा उन्नति का मूलमंत्र है ।

(घ) योजक चिह्न (Hyphen)– (–)

द्वन्द्व समास के दो पदों के बीच, युग्म शब्दों के बीच, सहचर शब्दों के बीच में इसका प्रयोग देखा जाता है । जैसे–

- माता–पिता दोनों खुश थे।
- बेरोजगार इधर–उधर भटकते रहते हैं।
- 2007 की बाढ़ में सर्वत्र पानी–ही–पानी दिखाई पड़ रहा था।
- गाँव–का–गाँव डूब चुका था।

यदि दो पदों के बीच किसी परसर्ग (कारक–चिह्न) की उपस्थिति लगे तो वहाँ योजक का प्रयोग करना चाहिए ।
जैसे– पद–परिचय (पद का परिचय)
वहाँ पर कारक–चिह्न होगा । (कारक का चिह्न) ।

(ड.) कोष्ठक चिह्न (Bracket)– ()

इस चिह्न का प्रयोग सामान्यतया दो जगहों पर होता है :

1) किसी पद का अर्थ–स्पष्ट करने के लिए। जैसे–
   - सहर (सुबह) होते ही मजदूर निकल पड़े काम की तलाश में ।
   - वह अनवरत (लगातार) काम करता रहा।

2) वक्ता के मनोभाव को स्पष्ट करने के लिए। भगत सिंह (उत्तेजित होकर) मैं मादरे हिन्द की खिदमत में अपना सिर चढ़ाने के लिए तैयार हूँ।

(च) उद्धरण–चिह्न / अवतरण–चिह्न – (" " / ' ')

यह चिह्न इकहरा एवं दुहरा दोनों रूपों में प्रयुक्त होता है; किन्तु दोनों के प्रयोग में अन्तर है । इकहरे का प्रयोग निम्नलिखित स्थानों पर होता है :

1) वाक्य में प्रयुक्त लोकोक्ति या कहावत में। जैसे – उससे जब कभी कहो कि अपना गायन प्रस्तुत करे तो वह कह बैठेगा, साज ही ठीक नहीं। इसे ही कहते हैं 'नाच न जाने ऑगन टेढा'।
2) किसी शब्द को High light करने के लिए। जैसे– वस्तु, व्यक्ति, स्थान, भावादि के नाम को 'संज्ञा' कहते हैं।
3) किसी शब्द के व्यंग्यार्थ प्रयोग में । जैसे–
   - चारों ओर मार–काट, आतंकवादी गतिविधियॉ, भ्रष्टाचार का बोलबाला, बच्चों तक का अपहरण, भयपूर्ण वातावरण, घर से निकलकर पुनः सही–सलामत लौटना– इसकी निश्चितता नहीं। आखिर क्यों न हो हमारा भारत 'महान्' जो है।

(छ) लाघव चिह्न (Short sign)– (0)

लघु (छोटा) से लाघव बना है। किसी प्रचलित बडे शब्द के छोटे रूप को (प्रथम अक्षर) दर्शाने के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है। जैसे–

- पं. नेहरू स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे।
- डॉ. मित्तल चक्षुरोग के लोकप्रिय चिकित्सक हैं।

उक्त वाक्यों में क्रमशः पं0– पण्डित के लिए और डॉ.– 'डॉक्टर' के लिए प्रयुक्त हुआ है ।

(ज) विवरण–चिह्न – (: –)

1) जब किसी पद की व्याख्या करनी हो या उसके संबंध में विस्तार से कुछ कहना हो तब इस चिह्न का प्रयोग होता है । जैसे–
   - रूपान्तर की दृष्टि से शब्द के दो प्रकार होते हैं : – विकारी एवं अविकारी ।
   - पद :– वाक्यों में प्रयुक्त शब्द अर्थवादी बनकर पद बन जाते हैं ।
2) विवरण–चिह्न का प्रयोग आवेदन–पत्र या प्रार्थना–पत्र में 'विषय' एवं 'द्वारा' के बाद होता है ।
   जैसे–
   सेवा में,
   श्रीमान प्राचार्य महोदय,
   बी0 पी0 एस0 पी0 एस0, नावकोठी ।
   द्वारा :– वर्ग शिक्षकक महोदय !
   विषय :– चार दिनों की छुट्टी हेतु ।

(झ) लोप चिह्न– (............)

1) इस चिह्न का प्रयोग कई जगहों पर और विभिन्न उद्देश्यों से किया जाता है :
   (i). वाक्य में छोडे गए अंश के लिए ।
   जैसे–
   अरे ! अभी तक तुम .... ।
   (ii). गोपनीय या अश्लील पदों को छुपाने के लिए ।
   जैसे–
   दारोगा ने उसे माँ–बहन संबंधी गाली देते हुए कहा .... ।
   (iii). रिक्त स्थान दिखाने के लिए ।
   जैसे–
   जिसका आदि होता है, उसका .... भी निश्चित है ।
2) कहानी आदि में सस्पेंस लाने या उत्तरोत्तर जिज्ञासा बढ़ाने के लिए भी परिणति को छुपाने के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

(ञ) त्रुटि–चिह्न / काकपद / हंसपद –(∧)

वाक्य में किसी पद या वाक्य के छूट जाने पर उस स्थान पर ही जहाँ इनका प्रयोग अपेक्षित था इस चिह्न का प्रयोग कर ठीक उसके ऊपर उस छूटे अंश को लिखा जाता है ।
जैसे –

- वह रोज ठीक $\overset{9}{\wedge}$ बजे दुकान खोलता है और रात के दस बजे दुकान बढ़ाकर घर आ जाता है।

(ट) अनुवृत्ति चिह्न– („)

जब लिखने में एक ही शब्द बार–बार ठीक नीचे लिखना पड़ता है तब इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है।
जैसे–

- आचार्य महावीर प्रसाद 'द्विवेदी'
- „ हजारी प्रसाद 'द्विवेदी'
- „ रामचन्द्र शुक्ल

36 CHAPTER

संज्ञाप्रकरणतः

माहेश्वर सूत्रों को अक्षरसमाम्नाय या वर्ण समाम्नाय भी कहा जाता है। (अक्षरवेद / वर्णवेद)

चौदह माहेश्वर सूत्र अण् आदि प्रत्याहार की संज्ञा करने वाले हैं। इनके अन्त्यवर्ण इत् संज्ञक है जिनका अकार उच्चारण के लिये नहीं है जबकि हकारादि में स्थित अकार उच्चारण के लिये है।

व्याख्या – धातुपाठ, सूत्रपाठ (अष्टध्यायी), गणपाठ, उणादिपाठ, लिंगानुशासन, आगम, प्रत्यय और आदेश । ये आठ उपदेश कहे गये हैं इन सभी के अंतिम हल वर्ण की इत् संज्ञा होती है।

अनुवृति – अन्य सूत्रों से पदों को ग्रहण करना अनुवृति कहलाता है। जैसे – हल्न्त्रूम् सूत्र में हल् व अन्त्यम् दो शब्द हैं जिनका अर्थ हुआ अंतिम व्यंजन। इतने से सूत्र का पूर्ण अर्थ स्पष्ट नहीं होता है। अतः वृत्तिकार ने उपदेशेऽननुनासिक इत् सूत्र से 'उपदेशे' और इत् दो पदों को ग्रहण कर लिया है।

1. **इत् संज्ञा सूत्र –**
   वृत्ति – उपदेशेऽन्त्रूं हल्त्स्यात् / उपदेश <u>आद्योच्चारणम् / सूत्रे</u>
   सूत्र – हलन्त्रूम् ।1 3 3।।
   व्याख्या – यह सूत्र उपदेश अवस्था में स्थित अन्त्रू हल् (व्यंजन) वर्ण की इत् संज्ञा करता है।
   सूत्र के आगे लिखी गयी संख्याएं क्रमशः अध्याय, पाद व सूत्र संख्या का ज्ञान कराती है। जैसे – हलन्त्यम् सूत्र अष्टाध्यायीा के प्रथम अध्याय`क तृतीय पाद का तृतीय सूत्र है।
2. **सूत्र** – उपदेशेऽजनुनासिक इत्।
   व्याख्या – उपदेश अवस्था में अनुनासिक अच् की इत्संज्ञा करता है।
3. **सूत्र** – चुटू
   व्याख्या – यह सूत्र उपदेश अवस्था में स्थित प्रारंभिक च् वर्ग (च्,छ्,ज्,झ्, ञ्) तथा ट वर्ग की इत् संज्ञा करता है।
4. **सूत्र** – लशक्वतद्धितार्थे
   व्याख्या – उपदेश अवस्था में तद्धित भिन्न प्रत्यय के प्रारंभिक ल,श,व, क वर्ग की इत् संज्ञा करता है।
   नोट – इत्संज्ञक वार्तिक – इर इत्संज्ञा वक्तव्या। धातु के अंत में विद्यमान इर् की इत्संज्ञा होती है जैसे – च्युतिर व धुतिर में इर्' की इत् संज्ञा होती है।
5. **सूत्र** – षः प्रत्ययस्य
   व्याख्या – उपदेश अवस्था में प्रारंभिक 'ष' की इत्संज्ञा करता है। जैसे – षाकन्
6. **सूत्र** – आदिर्ञिटुडवः
   व्याख्या – उपदेश अवस्था में धातु के आदि में स्थित ञि, टु, डु की इत् संज्ञा करता है।
   जैसे – डुधाञ्

अनुबंध – इत्संज्ञकत्वमनुबन्धत्वम
प्रत्यय व धातु के आदि व अंत में लगे स्वर एवं व्यंजन नो सहेतुक / इत्संज्ञक है वे अनुबंध इत्संज्ञक होते है।

लोप संज्ञा विधायक सूत्र – विद्यमान का लोपसंज्ञक
सूत्र – अदर्शनं लोपः
व्याख्या – शास्त्रीय विधान से प्राप्त ध्वनि का कर्णेन्द्रिय के द्वारा 'अदर्शन' या सुनाई न देना ही लोप कहा जाता हैं
जैसे – पचित इस पद में धातु पाठ में पढे गये, डु, अ और ष् की ध्वनि सुनाई नहीं देती है। शास्त्रीय विधान के अनुसार पच् धातु को धातु पाठ में डुपचष् पाके' इस प्रकार पढ़ा गया है।

सूत्र – तस्य लोपः
व्याख्या – यह सूत्र हलन्त्यम्' चुटू' आदि सूत्रों के द्वारा जिनकी इत्संज्ञा की जा चुकी है उनका लोप करता है। इत्संज्ञा का फल लोप होता है।
अइउण् आदि माहेश्वर सूत्रों के अंतिम वर्ण इत्संज्ञक तो हैं किंतु लोप नहीं होता अपितु इन से प्रत्याहार बनाये जाते हैं।
प्रत्याहारों की सिद्धि के निमित ही इनकी इत्संज्ञा की गयी है।
नोट – संज्ञा प्रकरण में तस्य लोपः ही एकमात्र विधि सूत्र है इसके अतिरिक्त सभी संज्ञा सूत्र हैं।

प्रत्याहार संज्ञा सूत्रम्

वृत्ति – अन्त्येनेता सहित आदिमध्यगानां स्वस्य च संज्ञा स्यात्
सूत्र – आदिरन्त्येन सहेता – इतिसंज्ञायाम्
व्याख्या – आदि और अंत से युक्त, मध्य स्थित वर्णों की तथा साथ ही अपनी संज्ञा का भी बोध कराना सहेता कहलाता है। और इन्हे ही प्रत्याहार कहा जाता है।
जैसे – अण् प्रत्याहार – यह प्रत्याहार अ,इ,उ इन वर्णों की संज्ञा का ज्ञान कराता है। ण् इत् संज्ञक होने से लोप हो जाता है तथा मध्य स्थित इ एवं उ वर्णों सहित स्वयं का भी बोधक है।
प्रत्याहार का अर्थ – संक्षिप्यन्ते वर्ण अन्नेति प्रत्याहारः
व्याख्या – जो वर्णों की संक्षिप्तता करता है प्रत्याहार कहलाता है।

क्र.सं.	प्रत्याहार	वर्ण
1.	अण्	अ इ उ।
2.	अक्	अ इ उ ऋ लृ।
3.	अच्	अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ। सभी स्वर (अचः स्वराः)
4.	अट्	अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ ह् य् व् र्।
5.	अण्	अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ ह् य् व् र् ल् ।
6.	अम्	सभी स्वर, य् व् र् ल् ञ् म् ङ् ण् न्।'
7.	अश्	सभी स्वर, ह् य् व् र् ल् वर्गों के 3, 4, 5 वर्ण।
8.	अल्	सभी वर्ण।
9.	इक्	इ उ ऋ लृ।
10.	इच्	इ उ ऋ लृ ए ओ ऐऔ
11.	इण्	इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ ह य् व् र् लृ
12.	उक्	उ ऋ लृ।
13.	एङ्	ए ओ।
14.	एच्	ए ओ ऐ औ।
15.	ऐच्	ऐ औ।
16.	खय्	वर्गों के 1, 2 वर्ण
17.	खर्	वर्गों के 1, 2 वर्ण श्, ष, स्।
18.	ङम्	ङ् ण् न्।
19.	चय्	च्, ट्, त्, क् प्।
20.	चर्	च्, ट्, त्, क् प् श्, ष, स्।
21.	छव्	छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्।
22.	जश्	ज्, ब्, ग्, ड्, द्।
23.	झय्	वर्गों के 1, 2, 3, 4 वर्ण।
24.	झर्	वर्गों के 1, 2, 3, 4 वर्ण श्, ष, स्।
25.	झल्	वर्गों के 1, 2, 3, 4 वर्ण श्, ष्, स्, ह।
26.	झश्	वर्गों के, 3, 4 वर्ण।
27.	झष्	झ्, भ्, घ्, ढ्, ध् (वर्गों के चतुर्थ वर्ण)
28.	बश्	ब्, ग्, ड्, द्।
29.	भष्	भ् घ् ढ् ध् (झ् को छोड़कर वर्गों के चतुर्थ वर्ण।)
30.	मय्	ञ् को छोड़कर वर्गों के 1,2,3,4,5 वर्ण।
31.	यञ्	य्, व्, र्, ल् वर्गों के 5 वें वर्ण, झ्, भ्।
32.	यण्	य्, व्, र्, ल्। (अन्तःस्थ वर्ण)
33.	यम्	य्, व्, र्, ल्, ञ्, म्, ङ्, ण्, न्,।
34.	यय्	य्, व्, र्, ल्, वर्गों के 1,2,3,4,5 वर्ण।
35.	यर्	य्, व्, र्, ल्, वर्गों के 1,2,3,4,5 वर्ण, श्, ष्, स्।
36.	रल्	य्, व् के अलावा सभी व्यंजन।
37.	वल्	य् के अलावा सभी व्यंजन।
38.	वश्	व्, र्, ल्, वर्गों के 3, 4, 5 वर्ण।
39.	शर्	श्, ष्, स्।
40.	शल्	श्, ष्, स्, ह्। (ऊष्म वर्ण)
41.	हल्	सभी व्यंजन
42.	हश्	ह्, य्, व्, र्, ल्, वर्गों के 3,4,5
43.	ञम्	ञ्, म्, ङ्, ण्, न्।
44.	रँ	र्, ल्।

ध्यातव्य

1. प्रत्याहारों में वर्गों के 1,2,3,4,5 वर्णों से तात्पर्य क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग एवं प वर्ग के प्रथम द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ व पञ्चम वर्ण से है।
2. अष्टाध्यायी में प्रत्याहारों की संख्या 41 या (रँ प्रत्याहार को जोडकर 42) मानी गई हैं। इनके अलावा वार्तिकों में 'चय' तथा उणादि सूत्रों में 'ञम्' प्रत्याहार को मानकर प्रत्याहारों की कुल संख्या 44 मानी गई हैं।
3. लघुसिद्धान्तकौमुदी में प्रत्याहारों की संख्या 42 मानी गई है।
4. इन प्रत्याहारों में 'अण्' प्रत्याहार का दो बार पाठ किया गया है।

अचों का अष्टादशभेद विवरण चक्र

ह्रस्व भेद	दीर्घ भेद	प्लुत भेद
अ, इ, उ, ऋ, लृ	**अ, इ, उ, ऋ, ए, ओ, ऐ, औ**	**अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ**
ह्रस्व उदात्त अनुनासिक	दीर्घ उदात्त अनुनासिक	प्लुत उदात्त अनुनासिक
ह्रस्व उदात्त अनुनासिक	दीर्घ उदात्त अनुनासिक	प्लुत उदात्त अनुनासिक
ह्रस्व अनुदात्त अनुनासिक	दीर्घ अनुदात्त अनुनासिक	प्लुत अनुदात्त अनुनासिक
ह्रस्व अनुदात्त अनुनासिक	दीर्घ अनुदात्त अनुनासिक	प्लुत अनुदात्त अनुनासिक
ह्रस्व स्वरित्त अनुनासिक	दीर्घ स्वरित्त अनुनासिक	प्लुत स्वरित्त अनुनासिक
ह्रस्व स्वरित्त अनुनासिक	दीर्घ स्वरित्त अनुनासिक	प्लुत स्वरित्त अनुनासिक

सवर्णसंज्ञा सूत्र

सूत्र – तुल्यास्य प्रयत्नं सवर्णम्

व्याख्या – तालु आदि स्थान एवं आभ्यन्तरं प्रयत्न ये दोनों जिन वर्णों के परस्पर समान हो, उन दोनों वर्णों की सवर्ण संज्ञा होती है।

जैसे – अ, आ / इ, ई, उ, ऊ

कु, चु, टु, तु, पु को उदित् कहा गया है।

नोट – अ और इ का आभ्यन्तर प्रयत्न समान है परंतु उच्चारण स्थान भिन्न– भिन्न क्रमश' कंठ एवं तालु है अत' सवर्ण नहीं है। इसी प्रकार अकार व ककार का उच्चारण स्थान कण है परंतु आभ्यतन्तर प्रयत्न क्रमशः विवृत्त एवं स्पष्ट होने से भिन्न–भिन्न हैं तथा सवर्ण नहीं कहे जा सकते है।

वर्णानामुच्चारणस्थानानि

व्याख्या – प्रत्येक वर्ण वाग्यंत्र के किसी अवयव से उच्चारित होता है। वर्णों के उच्चारित होने के भिन्न–भिन्न स्थानों की दृष्टि से मुख्यतः आठ उच्चारण स्थल हैं जो निम्नानुसार है–

अष्टौ स्थानानि वर्णानामुरः कण्ठः शिरस्तया।
जिह्वामूलं च दन्तश्च नासिकोष्ठौ च तालु च।।

उच्चारण स्थानों के आधार पर वर्णों का विभाजन

1.	अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः	–	अ, आ, क वर्ण, ह् (:) विसर्ग	–	कण्ठ
2.	इचुयशानां तालु	–	इ, ई, च वर्ग, य्, श्	–	तालु
3.	ऋटुरषाणां मूर्धा	–	ऋ, ॠ, ट वर्ग, र्, ष्	–	मूर्धा
4.	लृतुलसानां दन्ताः	–	लृ, त वर्ग, ल्, स्	–	दन्त
5.	उपूपध्मानीयानामोष्ठौ	–	उ, ऊ, प वर्ग, ᳲप ᳲफ	–	ओष्ठ
6.	ञमङणनानां नासिका च	–	ङ., ञ्, ण्, न्, म्	–	नासिका
7.	एदैतोः कण्ठतालु	–	ए, ऐ	–	कण्ठतालु
8.	ओदौतोः कण्ठोष्ठम्	–	ओ, औ	–	कण्ठोष्ठ
9.	वकारस्य दन्तोष्ठम्	–	व्	–	दन्तोष्ठ
10.	जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्	–	ᳲक, ᳲख	–	जिह्वामूल
11.	नासिकाऽनुस्वारस्य	–	(–ं)	–	नासिका

स्वरों के वैदिक भेद 3 है–

1. **उदात्त स्वर ("उच्चैरूदात्तः") –** ऊपर भाग से बोले जाने वाले अच् स्वर उदात्त कहलाते है। इसका कोई चिह्न नहीं होता है। जैसे – अ, इ, उ।
2. **अनुदात्त स्वर ("नीचैरनुदात्तः")** – निम्न से उच्चरित स्वर अनुदात्त कहलाते हैं। अनुदात्त की नीचे पड़ी रेखा का प्रयोग होता है। जैसे – अ, इ, उ।
3. **स्वरित स्वर ("समाहारः स्वरितः") –** उदात्त व अनुदात्त का समाहार या मिश्रण स्वरित स्वर कहलाता है। स्वरित के ऊपर खड़ी रेखा का प्रयोग होता है। जैसे– अ, इ, ऊ।

37 CHAPTER

सर्वनाम रूप

संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। संस्कृत व्याकरण में कुल 35 सर्वनाम शब्द हैं। इनमें से कुछ प्रमुख निम्न हैं – सर्व, यद्, तद्, एतद्, इदम्, अदस्, अस्मद्, युष्मद् आदि।

मध्यम पुरुष के साथ सदैव 'युष्मद' शब्द तथा उत्तम पुरुष के साथ 'अस्मद्' शब्द प्रयुक्त होता हैं।

सर्वनाम रूप पुल्लिंग एकवचन में

विभक्ति	तद्	किम्	एतद्	यत्	सर्व
प्रथमा	सः	कः	एषः	यः	सर्वः
द्वितीया	तम्	कम्	एतम्	यम्	सर्वम्
तृतीया	तेन	केन	एतेन	येन	सर्वेण
चतुर्थी	तस्मै	कस्मै	एतस्मै	यस्मै	सर्वस्मै
पञ्चमी	तस्मात्	कस्मात्	एतस्मात्	यस्मात्	सर्वस्मात्
षष्ठी	तस्य	कस्य	एतस्य	यस्य	सर्वस्य
सप्तमी	तस्मिन्	कस्मिन्	एतस्मिन्	यस्मिन्	सर्वस्मिन्

सर्वनामरूप पुल्लिंग द्विवचन

विभक्ति	तद्	किम्	एतद्	यत्	सर्व
प्रथमा	तौ	कौ	एतौ	यौ	सर्वो
द्वितीया	तौ	कौ	एतौ	यौ	सर्वौ
तृतीया	ताभ्याम्	काभ्याम्	एताभ्याम्	याभ्याम्	सर्वाभ्याम्
चतुर्थी	ताभ्याम्	काभ्याम्	एताभ्याम्	याभ्याम्	सर्वाभ्याम्
पञ्चमी	ताभ्याम्	काभ्याम्	एताभ्याम्	याभ्याम्	सर्वाभ्याम्
षष्ठी	तयोः	कयोः	एतयोः	ययोः	सर्वयोः
सप्तमी	तयोः	कयोः	एतयोः	ययोः	सर्वयोः

सर्वनाम रूप पुल्लिंग बहुवचन में

विभक्ति	तद्	किम्	एतद्	यत्	सर्व
प्रथमा	ते	के	एते	ये	सर्वे
द्वितीया	तान्	कान्`	एतान्	यान्	सर्वान्
तृतीया	तैः	कैः	एतैः	यैः	सर्वैः
चतुर्थी	तेभ्यः	केभ्यः	एतेभ्यः	येभ्यः	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	तेभ्यः	केभ्यः	एतेभ्यः	येभ्यः	सर्वेभ्यः
षष्ठी	तेषाम्	केषाम्	एतेषाम्	येषाम्	सर्वेषाम्
सप्तमी	तेषु	केषु	एतेषु	येषु	सर्वेषु

सर्वनाम रूप पुल्लिंग में

मूलशब्द	प्रथमा			द्वितीया			तृतीया		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहवचन**	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
तद् (वह)	सः	तौ	ते	तम्	तौ	तान्	तेन	ताभ्याम्	तैः
किम् (क्या)	कः	कौ	के	कम्	कौ	कान्	केन	काभ्याम्	कैः
एतद् (यह)	एषः	एतौ	एते	एतम्	एतौ	एतान्	येन	एताभ्याम्	एतैः
यत् (जो)	यः	यौ	ये	यम्	यौ	यान्	एतेन	याभ्याम्	यैः
सर्व (सब)	सर्वः	सर्वौ	सर्वे	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
इदम् (यह)	अयम्	इमौ	इमे	इमम्	इमौ	इमान्	अनेन	आभ्याम्	एभिः
अदस् (वह)	असौ	अमू	अमी	अमुम्	अमू	अमून्	अमुना	मूभ्याम्	अमीभिः
अस्मद् (मैं)	अहम्	आवाम्	वयम्	माम्	आवाम्	अस्मान्	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
युष्मद् (तुम)	त्वम्	युवाम्	यूयम्	तवाम्	युवाम्	युष्मान्	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
भवत् (आप)	भवान्	भवन्तौ	भवन्तः	भवन्तम्	भवन्तौ	भवतः	भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः

चतुर्थी			पंचमी		
एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः	अमुष्मात्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
मह्यम्	आवाभ्याम्	अस्मभ्यम्	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
तुभ्यम्	युवाभ्याम्	युष्मभ्यम्	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
भवते	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः	भवतः	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः

षष्ठी			सप्तमी		
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	ब्हुवचन
तस्य	तयोः	तेषाम्	तस्मिन्	तयोः	तेषु
कस्य	कयोः	केषाम	कस्मिन्	कयोः	केषु
एतस्य	एतयोः	एतेषाम्	एतस्मिन्	एतयोः	एतेषु
यस्य	ययोः	येषाम्	यस्मिन्	ययोः	येषु
सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु
अस्य	अनयोः	एषाम्	अस्मिन्	अनयोः	एषु
अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु
मम	आवयोः	अस्माकम्	मयि	आवयोः	अस्मासु
तव	युवयोः	युष्माकम्	त्वयि	युवयोः	युष्मासु
भवतः	भवतोः	भवताम्	भवति	भवतोः	भवत्सु

सम्बोधन– हे भवन्, हे भवन्तौ, हे भवन्तः

सर्वज्ञभूषण सर्वनाम रूप स्त्रीलिङ्ग में

मूलशब्द	प्रथमा			द्वितीया			तृतीया		
	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
तद् (वह)	सा	ते	ताः	ताम्	ते	ताः	तया	ताभ्याम्	ताभिः
किम् (क्या)	का	के	काः	काम्	के	काः	कया	काभ्याम्	काभिः
एतद् (यह)	एषा	एते	एताः	एताम्	एते	एताः	एतया	एताभ्याम्	एताभिः
यत् (जो)	या	ये	याः	याम्	ये	याः	यया	याभ्याम्	याभिः
सर्व (सब)	सर्वा	सर्वे	सर्वाः	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः

चतुर्थी			पंचमी		
एकवचन	**द्विववचन**	**बहुवचन**	**एकवचन**	**द्विववचन**	**बहुवचन**
तस्मै	ताभ्याम्	ताभ्यः	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
कस्मै	काभ्याम्	काभ्यः	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
एतस्मै	एताभ्याम्	एताभ्यः	एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः
यस्मै	याभ्याम्	याभ्यः	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः	सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः

षष्ठी			सप्तमी		
एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
तस्याः	तयोः	तासाम्	तस्याम्	तयोः	तासु
कस्याः	कयोः	कायाम्	कस्याम्	कयोः	कासु
एतस्याः	एतयोः	एतासाम्	एतस्याम्	एतयोः	एतासु
यस्याः	ययोः	यासाम्	यस्याम्	ययोः	यासु
सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु

सर्वनाम रूप नपुंसकलिङ्ग में

मूलशब्द	प्रथमा			द्वितीया			तृतीया		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तद् (वह)	तत्	ते	तानि	तत्	ते	तानि	तेन	ताभ्याम्	तैः
किम् (क्या)	किम्	के	कानि	किम्	के	कानि	केन	काभ्याम्	कैः
एतद् (यह)	एतत्	एते	एतानि	एतत्	एते	एतानि	येन	एताभ्याम्	एतैः
यत् (जो)	सत्	ये	यानि	सत्	ये	यानि	एतेन	याभ्याम्	यैः
सर्व (सब)	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः

चतुर्थी			पंचमी		
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः	तस्याः	ताभ्याम्	तेभ्यः
कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः	कस्याः	काभ्याम्	केभ्यः
एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः	एतस्याः	एताभ्याम्	एतेभ्यः
यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः	यस्याः	याभ्याम्	येभ्यः
सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः	सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः

षष्ठी			सप्तमी		
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तस्य	तयोः	तेषाम्	तस्मिन्	तयोः	तेषु
कस्य	कयोः	केषाम	कस्मिन्	कयोः	केषु
एतस्य	एतयोः	एतेषाम्	एतस्मिन्	एतयोः	एतेषु
यस्य	ययोः	येषाम्	यस्मिन्	ययोः	येषु
सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

अस्मद् और युष्मद्

एकवचन		द्विवचन		बहुवचन	
अहम्	त्वम्	आवाम्	युवाम्	वयम्	यूयम्
माम्	त्वाम्	आवाम्	युवाम्	अस्मान्	युष्मान्
मया	त्वया	आवाभ्याम्	युवाभ्याम्	अस्माभिः	युष्माभिः
मह्यम्	तुभ्यम्	आवाभ्याम्	युवाभ्याम्	अस्मभ्यम्	युष्मभ्यम्
मत्	त्वत्	आवाभ्याम्	युवाभ्याम्	अस्मत्	युष्मत्
मम	तव	आवयोः	युवयोः	अस्माकम्	युष्माकम्
मयि	त्वयि	आवयोः	युवयोः	अस्मासु	युष्मासु

अस्मद् (मैं)			युष्मद् (तुम)		
अहम्	आवाम्	वयम्	त्वम्	युवाम्	यूयम्
माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः
मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः
मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः
मयि	आवयोः	अस्मासु	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

नोट – अस्मद् और युष्मद् शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में यही रूप चलेगा। इनका सम्बोधन रूप नहीं होता।